

15-शिक्षा ही नहीं विद्या भी

अध्याय 1: परिवर्तन की पुकार और गुहार

सरल स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: किसी नए भाषा-भाषी क्षेत्र में बसने के लिए सबसे पहले क्या सीखना आवश्यक है? नमस्ते। आपके द्वारा प्रदान किए गए स्रोत "शिक्षा ही नहीं विद्या भी" के प्रत्येक अध्याय से विद्यार्थियों की समझ को बढ़ाने के लिए प्रश्न और उनके उत्तर यहाँ दिए गए हैं।

अध्याय 1: परिवर्तन की पुकार और गुहार

सरल स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: किसी नए भाषा-भाषी क्षेत्र में बसने के लिए सबसे पहले क्या सीखना आवश्यक है?

उत्तर: किसी नए भाषा-भाषी क्षेत्र में बसने के लिए सर्वप्रथम वहाँ की भाषा का अभ्यास करना आवश्यक है।

2. प्रश्न: भाषा के अलावा और किन चीजों से परिचित होने की आवश्यकता पड़ती है?

उत्तर: भाषा के अलावा वहाँ के रहन-सहन, रीति-रिवाज, विचार और संस्कृति से परिचित होने की आवश्यकता पड़ती है।

3. प्रश्न: ईसाई पादरी अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए किन क्षेत्रों को चुनते हैं?

उत्तर: ईसाई पादरी अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए प्रमुख रूप से पिछड़े इलाकों को अपना कार्यक्षेत्र चुनते हैं।

4. प्रश्न: इक्कीसवीं सदी में प्रवेश करने वालों को क्या करना पड़ेगा?

उत्तर: इक्कीसवीं सदी में प्रवेश करने वालों को पुरानी आदतें भुलानी पड़ेंगी और नए सिरे से नई जानकारीयाँ अर्जित करके उन्हें व्यवहार में उतारना पड़ेगा।

5. प्रश्न: युग परिवर्तन में मनुष्य की आकृति में क्या बदलाव आएगा?

उत्तर: युग परिवर्तन में मनुष्यों की आकृति तो अब जैसी ही रहेगी, उसमें कोई बदलाव नहीं आएगा।

6. प्रश्न: मनुष्य की प्रकृति बदलने से लेखक का क्या तात्पर्य है?

उत्तर: मनुष्य की प्रकृति बदलने से लेखक का तात्पर्य है कि उसकी मान्यता, भावना, विचारणा, इच्छा और गतिविधियों के समुच्चय में परिवर्तन होगा।

7. प्रश्न: आज की असंख्य विपत्तियों का सबसे बड़ा कारण क्या है?

उत्तर: आज की असंख्य विपत्तियों का सबसे बड़ा कारण यह है कि मनुष्य अदूरदर्शिता की बीमारी से ग्रस्त है।

8. प्रश्न: आज के मनुष्य की सोच कैसी हो गई है?

उत्तर: आज के मनुष्य की सोच यह हो गई है कि वह तात्कालिक लाभ को ही सब कुछ मान लेता है और केवल अपने स्वार्थ तक ही सीमित रहता है।

कठिन स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: लेखक के अनुसार, मौलिक दुष्प्रवृत्ति क्या है और उसने किन चीजों को जन्म दिया है?

उत्तर: लेखक के अनुसार, आत्म-केंद्रित स्वार्थ परायणता ही मौलिक दुष्प्रवृत्ति है। यह व्यक्ति को इतना कठोर और कृपण बना देती है कि वह अच्छे कार्यों के लिए कुछ भी खर्च नहीं करना चाहता और दूसरों की पीड़ा देखकर भी मदद के लिए उत्साहित नहीं होता। इसी दुष्प्रवृत्ति ने अनगिनत छल, प्रपंच, अपराधों और अनर्थों को जन्म दिया है।

2. प्रश्न: लेखक ने समाज के मूर्धन्य (अगुआ) लोगों, जैसे उद्योगपतियों और धर्मोपदेशकों, की आलोचना क्यों की है?

उत्तर: लेखक ने समाज के मूर्धन्य लोगों की आलोचना इसलिए की है क्योंकि वे अपनी जिम्मेदारियों को ठीक से नहीं निभा रहे हैं। उद्योगपति प्रदूषण फैलाकर और पेय जल को विषाक्त करके लोगों के स्वास्थ्य से खिलवाड़ कर रहे हैं, जबकि धर्मोपदेशक लोगों में शौर्य और साहस जगाने के बजाय केवल भाग्यवाद और परावलम्बन का पाठ पढ़ा रहे हैं।

3. प्रश्न: समाज में व्याप्त कुप्रचलों की जड़ क्या है और इसका समाधान क्या है?

उत्तर: समाज में व्याप्त कुप्रचलन जैसे नशा, बहु-प्रजनन, पर्दा प्रथा, जातिगत ऊँच-नीच, और अपराध, इन सभी की जड़ संकीर्ण स्वार्थपरता है। इसका समाधान इस विष-वृक्ष की जड़ों को काटना है, अर्थात् संकीर्ण स्वार्थपरता को समाप्त करना है, तभी समग्र परिवर्तन संभव है।

कठिनतम स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: "यदि इस प्रक्रिया को न अपनाया जाए और किसी भी पादरी को वहाँ भेज दिया जाए, तो वह उस अपरिचित स्थिति में कोई सफलता अर्जित न कर सकेगा।" इस कथन का युग परिवर्तन के संदर्भ में क्या गहरा अर्थ है?

उत्तर: इस कथन का युग परिवर्तन के संदर्भ में गहरा अर्थ यह है कि जैसे एक पादरी को नए क्षेत्र में सफल होने के लिए वहाँ की भाषा और संस्कृति को समझना अनिवार्य है, उसी प्रकार इक्कीसवीं सदी के नए युग में सफल होने के लिए मनुष्य को पुरानी स्वार्थपूर्ण मान्यताओं को छोड़कर नए आदर्शों और व्यवहारों को अपनाना होगा। बिना इस तैयारी और समझ के, कोई भी व्यक्ति या समाज उज्ज्वल भविष्य की ओर एक कदम भी आगे नहीं बढ़ पाएगा और असफल हो जाएगा।

2. प्रश्न: लेखक क्यों कहते हैं कि आज हर किसी को "अपनी छाया तक से डर लगने लगा है"? इस स्थिति के लिए कौन जिम्मेदार है और यह समाज के नैतिक पतन को कैसे दर्शाता है?

उत्तर: लेखक ऐसा इसलिए कहते हैं क्योंकि स्वार्थ और छल-प्रपंच इतना बढ़ गया है कि लोगों का एक-दूसरे

पर से विश्वास पूरी तरह उठ गया है। लोकहित का दिखावा करने वालों पर भी यह शक बना रहता है कि वे कोई बड़ा अनर्थ करने की योजना तो नहीं बना रहे हैं। इस स्थिति के लिए समाज के तथाकथित मूर्धन्य (अगुआ) लोग जिम्मेदार हैं, जिन्होंने अपने स्वार्थ के लिए समाज को धोखा दिया है। यह समाज के उस गंभीर नैतिक पतन को दर्शाता है जहाँ विश्वास और सद्भावना समाप्त हो चुकी है और हर रिश्ते में केवल संदेह और भय शेष रह गया है।

अध्याय 2: सृजन विद्या के प्राध्यापक चाहिए

सरल स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: नव सृजन योजना किसकी योजना है?

उत्तर: नव सृजन योजना महाकाल की योजना है।

2. प्रश्न: मात्र शिक्षा मनुष्य को कैसा बना सकती है?

उत्तर: मात्र शिक्षा-साक्षरता मनुष्य को निपट स्वार्थी भी बना सकती है।

3. प्रश्न: नवयुग के अनुरूप परिस्थितियाँ उत्पन्न करने के लिए कैसे प्राध्यापकों की आवश्यकता है?

उत्तर: नवयुग के लिए ऐसे प्राध्यापकों की आवश्यकता है जिनकी शिक्षा भले ही सामान्य हो, पर वे अपने चुम्बकीय व्यक्तित्व और चरित्र से दूसरों को प्रभावित करने की विद्या के धनी हों।

4. प्रश्न: "इक्कड़" मनुष्य किसे कहा गया है?

उत्तर: जो मनुष्य सामूहिकता को भूलकर केवल संकीर्ण स्वार्थपरता में जीता है और किसी पर भी हमला कर सकता है, उसे "इक्कड़" मनुष्य कहा गया है।

5. प्रश्न: सभी अपराधों और अनाचारों की जन्मदात्री किसे बताया गया है?

उत्तर: संकीर्ण स्वार्थपरता को ही समस्त अपराधों और अनाचारों की जन्मदात्री बताया गया है।

6. प्रश्न: मनुष्य को अपना गुजारा करने के लिए कितने समय का श्रम पर्याप्त बताया गया है?

उत्तर: लेखक के अनुसार, मनुष्य दो मुट्ठी अनाज और दो गज कपड़े के सहारे गुजारा कर सकता है, जिसके लिए उसका दो घंटे का श्रम-समय पर्याप्त होना चाहिए।

7. प्रश्न: आज समाज में किस चीज का महत्त्व नहीं समझा जा रहा है?

उत्तर: आज समाज में विद्या का महत्त्व नहीं समझा जा रहा है, जबकि शिक्षा-साक्षरता तो बढ़ ही रही है।

कठिन स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: "शिक्षा" और "विद्या" में लेखक ने क्या अंतर बताया है? नव सृजन के लिए विद्या क्यों आवश्यक है?

उत्तर: लेखक के अनुसार, "शिक्षा" केवल साक्षरता या जानकारी है जो मनुष्य को स्वार्थी बना सकती है, जबकि "विद्या" चरित्र निर्माण, उत्कृष्ट आदर्शवादिता और विवेकशीलता सिखाती है। नव सृजन का आधार

चरित्रनिष्ठ और भाव-संवेदना युक्त व्यक्तित्व हैं, जिन्हें केवल विद्या के माध्यम से ही बनाया जा सकता है, इसलिए नव सृजन के लिए विद्या शिक्षा से अधिक आवश्यक है।

2. प्रश्न: युग सृजेताओं को अभ्युदय के लिए कौन से दो कदम उठाने होंगे? विस्तार से समझाएँ।

उत्तर: युग सृजेताओं को दो कदम उठाने होंगे: पहला संयम और दूसरा सेवा-साधना। संयम का अर्थ है अपनी निजी आवश्यकताओं और महत्वाकांक्षाओं को घटाकर एक सादा जीवन जीना। सेवा-साधना का अर्थ है विद्या के विस्तार के लिए पूरे पुरुषार्थ और तड़प के साथ कार्य करना। इन दो कदमों से ही वे दूसरों के लिए आदर्श प्रस्तुत कर पाएंगे।

3. प्रश्न: लेखक के अनुसार, आज के उपदेशकों और सच्चे युग अध्यापकों में क्या मौलिक अंतर है?

उत्तर: आज के उपदेशक केवल लंबे-चौड़े भाषण देकर लोगों को प्रभावित करना चाहते हैं, पद और सम्मान के भूखे होते हैं, लेकिन उनका अपना व्यक्तित्व खोखला होता है, जिससे उनका कोई प्रभाव नहीं पड़ता। इसके विपरीत, सच्चे युग अध्यापक वे हैं जो पहले स्वयं संयम और सादगी का जीवन जीते हैं, अपनी सुविधाओं में कटौती करते हैं और फिर अपने आदर्श व्यक्तित्व से दूसरों को प्रेरणा देते हैं।

कठिनतम स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: लेखक ने मनुष्य की तुलना अन्य प्राणियों से करते हुए यह क्यों कहा है कि मनुष्य के पास निर्वाह के अतिरिक्त बहुत कुछ बच जाता है? इस "बचत" का आदर्श उपयोग क्या है और इसका दुरुपयोग आज की समस्याओं का कारण कैसे है?

उत्तर: लेखक ने यह इसलिए कहा है क्योंकि अन्य प्राणियों को अपना पूरा दिन पेट भरने और सुरक्षा की चिंता में बिताना पड़ता है, जबकि मनुष्य मात्र दो घंटे के श्रम से अपना निर्वाह कर सकता है। उसके पास बहुत समय, श्रम और साधन बच जाते हैं। इस "बचत" का आदर्श उपयोग पुण्य-परमार्थ और लोक-कल्याण के लिए करना है, जिससे व्यक्ति देव-मानव का स्तर पा सकता है। आज की समस्याओं का कारण इसी बचत का दुरुपयोग है, जहाँ मनुष्य इसे परमार्थ में न लगाकर अपनी तृष्णा और अहमन्यता को पूरा करने में लगाता है, जिससे संकीर्ण स्वार्थपरता और अपराधों का जन्म होता है।

2. प्रश्न: "ईमान और भगवान को भुला देने वाले आज के समुदाय को ऐसे उद्धारक चाहिए, जो गहरी कीचड़ में फँसे जानवरों को खींच-घसीट कर किनारे तक पहुँचा देने की साहसिकता का परिचय दे सकें।" इस कथन का विश्लेषण करें। यहाँ "कीचड़" और "जानवर" किसके प्रतीक हैं?

उत्तर: यह कथन आज के समाज की नैतिक दुर्दशा पर एक गहरी टिप्पणी है। यहाँ "कीचड़" संकीर्ण स्वार्थपरता, अपराध, अज्ञान और नैतिक पतन का प्रतीक है। "जानवर" उन मनुष्यों के प्रतीक हैं जो इस कीचड़ में फँसकर अपनी मानवीय गरिमा और विवेक खो चुके हैं। लेखक का कहना है कि आज समाज को केवल विद्वानों या

उपदेशकों की नहीं, बल्कि ऐसे साहसी और चरित्रवान "उद्धारकों" (युग अध्यापकों) की आवश्यकता है जो स्वयं आगे बढ़कर, बिना किसी स्वार्थ के, नैतिक रूप से पतित हो चुके लोगों को इस दुर्दशा से बाहर निकालने का व्यावहारिक और साहसिक कार्य कर सकें।

अध्याय 3: युगचेतना का प्रचार विस्तार

सरल स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: अध्यात्म स्तर की कर्मयोग साधना कैसे बन पड़ती है?

उत्तर: संयम और सेवा के दो व्रत धारण कर लेने पर अध्यात्म स्तर की कर्मयोग साधना बन पड़ती है।

2. प्रश्न: हर परिजन को युग-चेतना को व्यापक बनाने के लिए न्यूनतम कितना समय देने के लिए कहा गया है?

उत्तर: हर परिजन को इसके लिए न्यूनतम दो घण्टे का समय देने के लिए कहा गया है।

3. प्रश्न: दुर्बुद्धि को साफ करने के लिए किन दो चीजों को साबुन और पानी की तरह बताया गया है?

उत्तर: दुर्बुद्धि को साफ करने के लिए स्वाध्याय और सत्संग को साबुन और पानी की तरह बताया गया है।

4. प्रश्न: शान्तिकुञ्ज की युग निर्माण योजना द्वारा सृजित साहित्य का मूल्य कितना रखा गया है?

उत्तर: इस साहित्य का मूल्य प्रायः कागज और स्याही जितना ही रखा गया है और इसका कोई कॉपीराइट भी नहीं है।

5. प्रश्न: सत्संग के कौन से दो पक्ष बताए गए हैं?

उत्तर: सत्संग के दो पक्ष हैं—एक गायन और दूसरा प्रवचन।

6. प्रश्न: झोला पुस्तकालय की प्रक्रिया क्या है?

उत्तर: झोला पुस्तकालय में कंधे पर झोला लटकाकर उसमें युग साहित्य भरा जाता है और अपने परिचय क्षेत्र के लोगों को घर बैठे पढ़ने के लिए दिया जाता है और बाद में वापस ले लिया जाता है।

7. प्रश्न: दीवारों पर आदर्श वाक्य लिखने को क्या कहा गया है?

उत्तर: दीवारों पर आदर्श वाक्य लिखने को "बोलती दीवारें" कहा गया है, जो राहगीरों को निरंतर आदर्शवादी प्रेरणाएँ देती रहती हैं।

कठिन स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: लेखक ने २४ लाख व्यक्तियों के समयदान और अंशदान से नवसृजन के लिए एक विशाल योजना कैसे प्रस्तुत की है?

उत्तर: लेखक ने गणना करके बताया है कि यदि २४ लाख व्यक्ति प्रतिदिन दो-दो घंटे समयदान करें, तो यह ४८ लाख घंटे होते हैं, जो आठ लाख व्यक्तियों के पूरे दिन के काम के बराबर है। इसी प्रकार, यदि प्रत्येक व्यक्ति

केवल २० पैसे भी प्रतिदिन दे, तो यह चार लाख अस्सी हजार रुपये प्रतिदिन की राशि बन जाती है। लेखक के अनुसार, यह संयुक्त शक्ति इतनी बड़ी है कि इससे नवसृजन की सभी आवश्यकताएँ बिना किसी बाहरी सहायता के पूरी की जा सकती हैं।

2. प्रश्न: स्वाध्याय और सत्संग के परंपरागत स्वरूप में आज क्या कमी आ गई है और युग चेतना के लिए इसमें क्या सुधार आवश्यक है?

उत्तर: लेखक के अनुसार, आज स्वाध्याय और सत्संग का केवल नाम ही शेष रह गया है, उनका प्राणवान स्वरूप खो गया है। युग चेतना के लिए यह आवश्यक है कि स्वाध्याय और सत्संग युग की समस्याओं के अनुरूप हों और उनका व्यावहारिक समाधान प्रस्तुत करें। सत्संग ऐसा होना चाहिए जो प्रखर प्रतिभा और सामयिक उलझनों के समाधान की समझ रखने वाले प्राणवान व्यक्तियों द्वारा दिया जाए, न कि कोई भी व्यर्थ की बातें हों।

3. प्रश्न: युग चेतना के प्रचार-विस्तार के लिए किन-किन माध्यमों का उल्लेख किया गया है? उनमें से किन्हीं तीन का वर्णन करें।

उत्तर: युग चेतना के विस्तार के लिए अनेक माध्यम बताए गए हैं, जैसे - ज्ञान रथ, साइकिल यात्राएँ, सद्वाक्य लेखन, झोला पुस्तकालय, सत्संग और दीपयज्ञ।

- झोला पुस्तकालय: इसमें कार्यकर्ता घर-घर जाकर पढ़ने के लिए पुस्तकें देते और वापस लाते हैं।
- सद्वाक्य लेखन: इसमें दीवारों पर प्रेरक वाक्य लिखे जाते हैं ताकि आते-जाते लोग उन्हें पढ़ें और प्रेरित हों।
- साप्ताहिक सत्संग: प्रज्ञा केंद्रों में कीर्तन, युग साहित्य के पाठ और दीप यज्ञ के माध्यम से लोगों को जोड़ा जाता है।

कठिनतम स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: "दुर्बुद्धि को भी कपड़े की तरह साबुन, पानी से धोया जा सकता है।" इस रूपक का विश्लेषण करें। स्वाध्याय और सत्संग इस "धुलाई" की प्रक्रिया में कैसे काम करते हैं?

उत्तर: यह एक शक्तिशाली रूपक है जो बताता है कि बुरी सोच या दुर्बुद्धि कोई स्थायी चीज नहीं है, उसे बदला जा सकता है। जैसे साबुन और पानी कपड़े से मैल हटाते हैं, वैसे ही स्वाध्याय (अच्छे विचारों का अध्ययन) और सत्संग (अच्छे लोगों का साथ) मन से बुरे विचारों और गलत धारणाओं को हटाकर उसे स्वच्छ करते हैं। स्वाध्याय व्यक्ति को सही-गलत में भेद करने का विवेक देता है, जबकि सत्संग उसे उन विचारों को व्यवहार में लाने के लिए एक प्रेरक वातावरण और साहस प्रदान करता है। इस प्रकार ये दोनों मिलकर व्यक्ति के चिंतन और आचरण का पूरी तरह परिष्कार कर देते हैं।

2. प्रश्न: लेखक के अनुसार, छोटे-छोटे व्यक्तिगत प्रयास (जैसे दो घंटे समयदान, 20 पैसे अंशदान) मिलकर एक महान परिवर्तन कैसे ला सकते हैं? सामूहिकता की शक्ति पर लेखक के दृष्टिकोण को स्पष्ट करें।

उत्तर: लेखक का दृष्टिकोण है कि व्यक्तिगत स्तर पर प्रयास भले ही छोटे दिखें, लेकिन जब वे संगठित और सामूहिक हो जाते हैं तो उनकी शक्ति असीम हो जाती है। जैसे अनगिनत धागे मिलकर मजबूत कपड़ा और तिनके मिलकर रस्सा बनाते हैं, उसी प्रकार लाखों लोगों का छोटा-छोटा समयदान और अंशदान मिलकर एक ऐसी विराट शक्ति का निर्माण करता है जो नवयुग के सृजन जैसे विशाल लक्ष्य को भी संभव बना सकती है। यह दर्शाता है कि किसी भी बड़े परिवर्तन के लिए कुछ महान लोगों पर निर्भर रहने की बजाय, जन-जन की सामूहिक भागीदारी अधिक प्रभावी और स्थायी होती है।

अध्याय 4: नवसृजन की अनुपम अध्यात्म-साधना

सरल स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: स्थूल शरीर के अतिरिक्त मनुष्य के और कौन से दो शरीर होते हैं?

उत्तर: स्थूल शरीर के अतिरिक्त मनुष्य के दो और अदृश्य शरीर होते हैं- सूक्ष्म शरीर और कारण शरीर।

2. प्रश्न: सूक्ष्म शरीर के लिए कौन सी साधना और कारण शरीर के लिए कौन सी साधना निर्धारित की गई है?

उत्तर: सूक्ष्म शरीर के लिए जप और कारण शरीर के लिए ध्यान की प्रक्रिया निर्धारित की गई है।

3. प्रश्न: लेखक ने किस मंत्र को सार्वजनीन स्तर का बताया है?

उत्तर: लेखक ने गायत्री महामंत्र को सार्वजनीन स्तर का बताया है।

4. प्रश्न: एक माला गायत्री जप करने में लगभग कितना समय लगता है?

उत्तर: एक माला (१०८ मंत्र) जपने में प्रायः पाँच मिनट लगते हैं।

5. प्रश्न: ध्यान के लिए किसका ध्यान सर्वोत्तम बताया गया है?

उत्तर: ध्यान के लिए प्रातःकालीन सूर्य का ध्यान सर्वोत्तम बताया गया है।

6. प्रश्न: सूर्य का ध्यान करते समय क्या धारणा करनी चाहिए?

उत्तर: यह धारणा करनी चाहिए कि सूर्य की दिव्य किरणें हमारे स्थूल, सूक्ष्म और कारण शरीर में प्रवेश कर उन्हें प्रकाश, ऊर्जा और तेजस्विता से भर रही हैं।

7. प्रश्न: युग संधि महापुरश्चरण क्या है?

उत्तर: यह एक सामूहिक आध्यात्मिक अनुष्ठान है जिसमें हर दिन २४ करोड़ गायत्री मंत्र जप करने का संकल्प लिया गया है।

कठिन स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: गायत्री जप से व्यक्ति के गुण, कर्म, स्वभाव का परिष्कार कैसे होता है?

उत्तर: लेखक के अनुसार, गायत्री मंत्र के जप से सूक्ष्म शरीर में स्थित चौबीस ग्रंथियाँ जागृत होती हैं। इन ग्रंथियों के जागरण से व्यक्ति के गुण, कर्म और स्वभाव का परिष्कार होता है, अर्थात् उनमें सकारात्मक सुधार आता है। इससे बुद्धि (मेधा) निखरती है और विशेष योग्यता (प्रतिभा) उभरती है।

2. प्रश्न: सविता (सूर्य) के ध्यान से साधक के तीनों शरीरों पर क्या प्रभाव पड़ता है?

उत्तर: सविता के ध्यान से साधक के तीनों शरीरों में ऊर्जा का संचार होता है। स्थूल शरीर में ओजस् (शारीरिक बल), सूक्ष्म शरीर में तेजस् (मानसिक और बौद्धिक प्रखरता) और कारण शरीर में वर्चस् (आत्मिक प्रभाव) का उभार आता है। इससे साधक का पूरा व्यक्तित्व ओजस्वी, मनस्वी और तपस्वी बनता है।

3. प्रश्न: सामूहिकता की शक्ति को समझाने के लिए लेखक ने कौन-कौन से उदाहरण दिए हैं? नव-युग के अवतरण में इसकी क्या भूमिका है?

उत्तर: सामूहिकता की शक्ति को समझाने के लिए लेखक ने कई उदाहरण दिए हैं, जैसे - असंख्य ईंटों से भव्य भवन बनना, अनेक धागों से कपड़ा बनना, तिनकों से मजबूत रस्सा बनना, और सैनिकों के समुदाय से समर्थ सेना बनना। नव-युग के अवतरण में इसकी भूमिका यह है कि जैसे बुद्ध के भिक्षुओं या गाँधी के सत्याग्रहियों ने मिलकर बड़े परिवर्तन किए, उसी प्रकार देव मानवों का एक संगठित समूह ही नव-युग की ज्ञान गंगा को धरती पर उतार सकता है।

कठिनतम स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: युग संधि को "प्रसव पीड़ा" और "नवजात शिशु के आगमन" दोनों से क्यों जोड़ा गया है? इस रूपक का वर्तमान समय के संदर्भ में क्या महत्व है?

उत्तर: युग संधि को इन दोनों से इसलिए जोड़ा गया है क्योंकि यह एक बड़े परिवर्तन का समय है। "प्रसव पीड़ा" का अर्थ है पुरानी व्यवस्था के टूटने और विनाश से होने वाला कष्ट, उथल-पुथल और संघर्ष। "नवजात शिशु का आगमन" नए युग, यानी उज्ज्वल भविष्य, आशा और सृजन का प्रतीक है। वर्तमान समय के संदर्भ में इसका महत्व यह है कि हमें आज की समस्याओं और उथल-पुथल से घबराना नहीं चाहिए, बल्कि यह समझना चाहिए कि यह एक बेहतर भविष्य के जन्म की आवश्यक प्रक्रिया है, और हमें इस नवनिर्माण में सकारात्मक भूमिका निभानी है।

2. प्रश्न: लेखक ने युग संधि महापुरश्चरण की तुलना "भगीरथ साधना" से क्यों की है? इस साधना का उद्देश्य क्या है और इसमें २४ लाख परिजनों की एक-एक माला की क्या भूमिका है?

उत्तर: जैसे राजा भगीरथ अपनी कठिन तपस्या से गंगा को स्वर्ग से धरती पर लाए थे, उसी प्रकार इस

महापुरश्चरण को "भगीरथ साधना" कहा गया है क्योंकि इसका उद्देश्य भी एक सामूहिक तपस्या के द्वारा नव-युग की ज्ञान गंगा को धरती पर अवतरित करना है। इस साधना का लक्ष्य है एक ऐसा शक्तिशाली आध्यात्मिक वातावरण बनाना जो सतयुग की वापसी का आधार बन सके। इसमें २४ लाख परिजनों द्वारा की गई एक-एक माला की भूमिका महत्वपूर्ण है, क्योंकि यही छोटी-छोटी साधनाएँ मिलकर २४ करोड़ जप के विशाल लक्ष्य को पूरा करती हैं और उस सामूहिक शक्ति का निर्माण करती हैं जो इस महान परिवर्तन को संभव बनाएगी।

अध्याय 5: वाणी द्वारा युग चेतना का प्रसार-विस्तार

सरल स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: विचारों को प्रभावित करने वाली दो मुख्य प्रक्रियाएँ कौन सी हैं?

उत्तर: विचारों को प्रभावित करने वाली दो मुख्य प्रक्रियाएँ हैं - वाणी और लेखनी।

2. प्रश्न: वाणी से कौन सा कार्य संपन्न होता है और लेखनी से क्या होता है?

उत्तर: वाणी से सत्संग संपन्न होता है और लेखनी स्वाध्याय का सरंजाम जुटाती है।

3. प्रश्न: वाणी का लाभ कौन लोग उठा सकते हैं?

उत्तर: वाणी का लाभ शिक्षित और अशिक्षित दोनों ही समान रूप से उठा सकते हैं।

4. प्रश्न: आज के समय में बड़े सभा-समारोह या सम्मेलन आयोजित करना कठिन क्यों हो गया है?

उत्तर: आज के समय में बड़े सम्मेलन आयोजित करना बहुत खर्चीला और आडम्बर भरा हो गया है, और बड़ी भीड़ अक्सर मेले जैसी बनकर रह जाती है, जिससे कोई तीखी प्रेरणा नहीं उभरती।

5. प्रश्न: पुराने जमाने में कथा-प्रवचन का स्वरूप कैसा होता था?

उत्तर: पुराने जमाने में लाउडस्पीकर नहीं थे, इसलिए विशाल भीड़ वाले समारोह नहीं होते थे, बल्कि छोटे आकार के कथा-प्रवचनों से काम चलाया जाता था।

6. प्रश्न: ज्ञानरथ क्या है और इसमें क्या-क्या उपकरण लगे होते हैं?

उत्तर: ज्ञानरथ साइकिल के पहियों वाला एक प्रचार वाहन है, जिसमें बैटरी, टेपरिकार्डर और लाउडस्पीकर लगे होते हैं।

7. प्रश्न: ज्ञानरथ के अलावा प्रचार के लिए और कौन से दो छोटे संस्करण बनाए गए हैं?

उत्तर: इसके अलावा दो छोटे संस्करण हैं - एक साधारण साइकिल पर प्रचार सामग्री फिट करना और दूसरा एक छोटी अटैची जिसमें सभी उपकरण फिट हों।

कठिन स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: लेखक के अनुसार, आज के सत्संग और स्वाध्याय की सार्थकता किस कसौटी पर परखी जानी चाहिए?

उत्तर: लेखक के अनुसार, आज के सत्संग और स्वाध्याय की सार्थकता तभी स्वीकार करनी चाहिए, जब वे आज की समस्याओं का आदर्शवादी एवं व्यावहारिक समाधान प्रस्तुत कर रहे हों। केवल पुरानी बातों को दोहराना पर्याप्त नहीं है, बल्कि उसमें आज के युग के लिए औचित्य और समाधान होना चाहिए।

2. प्रश्न: "विचारक्रांति" का स्वरूप क्या है और इसे प्राप्त करने के लिए कौन सी नीति अपनानी चाहिए?

उत्तर: विचारक्रांति का स्वरूप है कि हम "अपना सो अच्छा, पराया सो बुरा" की संकीर्ण मान्यता को त्याग दें। इसके लिए हमें राजहंस की तरह नीर-क्षीर विवेक की नीति अपनानी चाहिए, अर्थात् जहाँ से भी सत्य और औचित्य मिले, उसे ग्रहण करना चाहिए, चाहे वह कहीं से भी आ रहा हो।

3. प्रश्न: लेखक ने वाणी और लेखनी की तुलना "छैनी-हथौड़ा" और "प्रचण्ड अस्त्र-शस्त्र" से क्यों की है?

उत्तर: लेखक ने यह तुलना इसलिए की है क्योंकि जिस प्रकार छैनी-हथौड़ा कठोर पत्थर को आकार देता है, उसी प्रकार वाणी और लेखनी को कठोर पत्थर जैसी निष्ठुर स्वार्थपरता को युग के अनुरूप आकार में गढ़ना चाहिए। इसी तरह, जैसे अस्त्र-शस्त्र से शत्रु से लड़ा जाता है, वैसे ही वाणी और लेखनी को प्रचण्ड अस्त्र-शस्त्र मानकर समाज में व्याप्त असुरता (बुरी प्रवृत्तियों) से जूझना चाहिए।

कठिनतम स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: "पहाड़ खुद चलकर अपने घर न आए तो दूसरा तरीका यही शेष रहता है कि खुद चलकर पहाड़ की तलहटी या चोटी तक पहुँचा जाए।" इस कथन का युग चेतना के प्रसार के संदर्भ में क्या गहरा अर्थ है?

उत्तर: इस कथन का गहरा अर्थ यह है कि हम यह उम्मीद नहीं कर सकते कि आम जनता, जो अपनी समस्याओं और अज्ञान में सोई हुई है, वह स्वयं ज्ञान और चेतना की तलाश में आएगी। इसके बजाय, युग सृजेताओं और प्रचारकों को स्वयं पहल करके, भाग-दौड़ करके, लोगों के बीच (गली-मुहल्लों और देहातों में) जाना होगा और उन्हें जगाना होगा। यह सक्रिय और जमीनी स्तर पर कार्य करने की अनिवार्यता को दर्शाता है।

2. प्रश्न: लेखक ने ज्ञानरथ और साइकिल जैसे छोटे, सस्ते प्रचार माध्यमों पर इतना जोर क्यों दिया है? यह बड़े माध्यमों की तुलना में कैसे अधिक प्रभावी हो सकते हैं?

उत्तर: लेखक ने इन छोटे माध्यमों पर इसलिए जोर दिया है क्योंकि ये सस्ते, सुलभ और जन-जन तक पहुँचने में सक्षम हैं। कोई भी साधारण व्यक्ति इन्हें चला सकता है, और ये गली-मुहल्लों, हाट-बाजारों जैसे उन स्थानों पर भी पहुँच सकते हैं जहाँ बड़े आयोजन संभव नहीं हैं। बड़े माध्यम (जैसे विशाल सम्मेलन) खर्चीले होते हैं और अक्सर उनका प्रभाव सतही होता है, जबकि ये छोटे माध्यम निरंतर और सीधे तौर पर लोगों से जुड़कर एक गहरा और स्थायी प्रभाव डाल सकते हैं।

अध्याय 6: लोक-रंजन के साथ जुड़ा हुआ लोक-मंगल

सरल स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: युग चेतना के प्रसार के लिए ईसाई और साम्यवादी विचारधाराओं ने किस माध्यम का व्यापक उपयोग किया?

उत्तर: इन दोनों विचारधाराओं ने अपनी बात को करोड़ों लोगों तक पहुँचाने के लिए अपनी पुस्तकों और साहित्य को संसार की लगभग सभी प्रमुख भाषाओं में छपा और वितरित किया।

2. प्रश्न: आज लोक चेतना को दिशा देने वाले दो सबसे सशक्त माध्यम कौन से हैं?

उत्तर: आज लोक चेतना को दिशा देने वाले दो सशक्त माध्यम हैं सिनेमा-फिल्म और वीडियो।

3. प्रश्न: सिनेमा और वीडियो साहित्य की तुलना में अधिक प्रभावशाली क्यों हैं?

उत्तर: ये इसलिए अधिक प्रभावशाली हैं क्योंकि ये दृश्य और श्रव्य दोनों हैं, और इनका लाभ शिक्षितों के साथ-साथ दो-तिहाई अशिक्षित जनता भी उठा सकती है।

4. प्रश्न: पुराने समय में लोक रंजन के साथ लोकमंगल का कार्य करने वाले कुछ माध्यम कौन से थे?

उत्तर: पुराने समय में राम लीला, रास लीला, नौटंकी, संगीत मंडलियाँ और कठपुतलियों जैसे माध्यम लोक रंजन के साथ लोकमंगल का कार्य करते थे।

5. प्रश्न: आज इन पारंपरिक माध्यमों की क्या स्थिति है?

उत्तर: बढ़ती हुई यांत्रिक सभ्यता के कारण इन पारंपरिक माध्यमों का आधार लड़खड़ा गया है और उनका अस्तित्व लगभग मिटता जा रहा है।

कठिन स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: युग परिवर्तन की प्रक्रिया का संबंध संसार के सभी मनुष्यों से कैसे है, और इसमें भाषाओं की भिन्नता क्या समस्या उत्पन्न करती है?

उत्तर: युग परिवर्तन का सीधा संबंध संसार के सभी (लगभग ६०० करोड़) मनुष्यों से है, क्योंकि इसका उद्देश्य सभी के जीवन को बेहतर बनाना है। इसमें भाषाओं की भिन्नता "कोढ़ में खाज" की तरह एक बड़ी समस्या है, क्योंकि कोई एक ऐसी भाषा नहीं है जिसके माध्यम से सभी तक उज्ज्वल भविष्य का संदेश पहुँचाया जा सके।

2. प्रश्न: सरकारों के कब्जे में जो रेडियो और दूरदर्शन हैं, लेखक ने उनकी क्या सीमाएँ बताई हैं?

उत्तर: लेखक के अनुसार, सरकारें इन माध्यमों का उपयोग अपने मतलब की जानकारी देने के लिए करती हैं। इसके साथ ही, वे मनोरंजन के नाम पर कामुकता जैसी दुष्प्रवृत्तियों को बढ़ावा देने वाली सामग्री भी दर्शकों के गले उतार देती हैं, जिससे युग चेतना के अनुरूप कार्य की आशा नहीं की जा सकती।

3. प्रश्न: यदि किसी के पास बड़े प्रचार माध्यम उपलब्ध न हों, तो वह विचार-विनिमय के लिए क्या कर सकता है?

उत्तर: लेखक सुझाव देते हैं कि बड़े माध्यम न होने पर भी व्यक्ति अपने से छोटों को किस्से-कहानियाँ और आदर्श पुरुषों के जीवन चरित्र सुना सकता है, उन पर गीत बनाकर खंजरी जैसे छोटे वाद्य के सहारे उन्हें सुना सकता है। जैसे एक आठवीं कक्षा का छात्र छोटे छात्रों को पढ़ा सकता है, वैसे ही हर कोई अपने से कम जानकारी लोगों को आदर्शवादी प्रेरणा दे सकता है।

कठिनतम स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: "लोक-रंजन के साथ जुड़ा हुआ लोक-मंगल" से लेखक का क्या तात्पर्य है? आज के मनोरंजन के माध्यम इस आदर्श से कैसे भटक गए हैं?

उत्तर: "लोक-रंजन के साथ जुड़ा हुआ लोक-मंगल" का तात्पर्य ऐसे मनोरंजन से है जो लोगों का मन बहलाने के साथ-साथ उनके चरित्र का निर्माण करे, उन्हें नैतिक और सामाजिक रूप से बेहतर बनाए। पुराने माध्यम जैसे रामलीला आदि यही करते थे। आज के माध्यम (जैसे सिनेमा, टीवी) इस आदर्श से भटक गए हैं क्योंकि वे केवल मनोरंजन और व्यावसायिक लाभ पर केंद्रित हैं और अक्सर ऐसी सामग्री प्रस्तुत करते हैं जो कामुकता जैसी दुष्प्रवृत्तियों को बढ़ावा देती है, जिससे लोक-मंगल के बजाय समाज का अहित होता है।

2. प्रश्न: लेखक क्यों कहते हैं कि युग परिवर्तन की प्रक्रिया अन्य सभी (ईसाई, साम्यवादी, सरकारी) प्रचारों से बढ़कर है? इसके लिए किस स्तर के प्रयास की आवश्यकता है?

उत्तर: लेखक ऐसा इसलिए कहते हैं क्योंकि अन्य सभी प्रचार एक सीमित विचारधारा या नीति तक सीमित हैं, जबकि युग परिवर्तन का संबंध संपूर्ण मानवता के कल्याण से है और यह संसार के हर व्यक्ति को प्रभावित करता है। इसके लिए बहुत बड़े स्तर के प्रयास की आवश्यकता है, जिसमें युग चिंतन को दुनिया की विभिन्न भाषाओं में, वहाँ की स्थानीय परिस्थितियों के अनुरूप ढालकर प्रकाशित करना होगा, ताकि विशाल जनसमुदाय में नवयुग के प्रति श्रद्धा और उत्सुकता पैदा की जा सके।

अध्याय 7: तीर्थयात्रा का आदर्श

सरल स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: गोखले जी ने गाँधी जी को देश सेवा में लगने से पहले क्या करने की सलाह दी?

उत्तर: गोखले जी ने गाँधी जी को सलाह दी कि वे पहले पूरे देश की यात्रा करें और लोगों की वास्तविक परिस्थितियों को जानें।

2. प्रश्न: गाँधी जी ने आधी धोती पहनने का व्रत क्यों लिया?

उत्तर: उन्होंने कुछ महिलाओं को गरीबी के कारण आधी धोती पहनकर नहाते और आधी सुखाते देखा, जिससे वे इतने द्रवित हुए कि उन्होंने स्वयं भी आधी धोती पहनने का व्रत ले लिया।

3. प्रश्न: पुरातन काल में तीर्थयात्राएँ पैदल क्यों की जाती थीं?

उत्तर: तीर्थयात्राएँ पैदल इसलिए की जाती थीं ताकि यात्री अनुभव संपादन, लोगों से पारस्परिक परिचय और स्वास्थ्य संवर्धन, इन तीनों प्रक्रियाओं से लाभ उठा सकें।

4. प्रश्न: आज के समय में तीर्थयात्रा का स्वरूप कैसा हो गया है?

उत्तर: आज लोग रेल-मोटरो से दौड़कर किसी देवता की प्रतिमा का दर्शन करते हैं और जलाशयों में डुबकी लगाकर वापस आ जाते हैं, जिसमें धर्म-प्रचार और सत्संग का उद्देश्य खो गया है।

5. प्रश्न: "अचल तीर्थ" और "चल तीर्थ" में क्या अंतर है?

उत्तर: अचल तीर्थ वे हैं जो ईंट-पत्थर से बने हैं और एक जगह स्थिर रहते हैं (जैसे मंदिर)। चल तीर्थ वे जीवंत व्यक्ति (जैसे साधु, परिव्राजक) हैं जो स्वयं चलकर लोगों के घर-द्वार तक पहुँचते हैं और ज्ञान चेतना फैलाते हैं।

कठिन स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: देशाटन या तीर्थयात्रा का वास्तविक उद्देश्य क्या है और यह आज की यात्राओं से कैसे भिन्न है?

उत्तर: तीर्थयात्रा का वास्तविक उद्देश्य केवल घूमना या मनोरंजन नहीं, बल्कि देशवासियों की वास्तविक स्थिति को समझना, उनकी समस्याओं को जानना और पड़ोसियों के प्रति अपनी जिम्मेदारी का अनुभव करना है। पुरातन काल में इसके साथ धर्म-प्रचार, सत्संग और लोक-शिक्षण भी जुड़ा होता था। आज की यात्राएँ इन उद्देश्यों से रहित होकर केवल एक touristic गतिविधि बनकर रह गई हैं।

2. प्रश्न: लेखक क्यों कहते हैं कि असली भारत देहातों में रहता है और तीर्थ यात्राओं को देहातों पर केंद्रित क्यों होना चाहिए?

उत्तर: लेखक ऐसा इसलिए कहते हैं क्योंकि देश की अधिकांश जनसंख्या और वास्तविक समस्याएँ गाँवों में हैं। देश की प्रगति गाँवों की प्रगति पर निर्भर करती है। इसलिए, तीर्थ यात्राओं को बड़े शहरों के बजाय देहातों पर केंद्रित होना चाहिए ताकि वहाँ के लोगों तक प्रेरणा और चेतना पहुँचाई जा सके, जैसा कि पुराने समय में होता था।

3. प्रश्न: चल देवालयों (साधु-ब्राह्मणों) का पुण्य-प्रताप अचल देवालयों से असंख्य गुना अधिक क्यों माना जाता था, और आज उनका अस्तित्व क्यों समाप्त हो गया है?

उत्तर: चल देवालयों का पुण्य-प्रताप इसलिए अधिक था क्योंकि वे स्वयं लोगों तक पहुँचकर, बिना बुलाए, ज्ञान और आदर्शों का प्रकाश फैलाते थे, जिससे समाज जीवंत बना रहता था। आज उनका अस्तित्व इसलिए

समाप्त हो गया है क्योंकि जड़ता, अहंकार और आलस्य-प्रमाद के कारण अब लोग घर बैठे ही सम्मान और सुविधा पाना चाहते हैं और समाज में घूमने-फिरने का कष्ट नहीं उठाना चाहते।

कठिनतम स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: "जिसके साथ धर्म-प्रचार जुड़ा हुआ न हो, उसके द्वारा किसे, किस प्रकार धर्म लाभ मिलेगा?" इस प्रश्न के माध्यम से लेखक आज की धार्मिकता पर क्या गहरा कटाक्ष कर रहे हैं?

उत्तर: इस प्रश्न के माध्यम से लेखक आज की खोखली धार्मिकता पर गहरा कटाक्ष कर रहे हैं। उनका कहना है कि धर्म का सच्चा लाभ मूर्तियों के दर्शन या नदियों में डुबकी लगाने जैसे कर्मकांडों से नहीं मिलता, बल्कि धर्म के सिद्धांतों (आदर्शों, सद्गुणों) को समझने और जीवन में उतारने से मिलता है। जब तीर्थयात्रा में सत्संग, शिक्षण और प्रेरणा का अभाव हो, तो वह केवल एक शारीरिक क्रिया बनकर रह जाती है, जिससे कोई आत्मिक या सामाजिक लाभ संभव नहीं है।

2. प्रश्न: शान्तिकुञ्ज ने "चल तीर्थ" की पुरातन परम्परा को पुनर्जीवित करने के लिए क्या आधुनिक समाधान प्रस्तुत किया है? यह कैसे काम करता है?

उत्तर: शान्तिकुञ्ज ने इस परम्परा को पुनर्जीवित करने के लिए साइकिल टोलियों और आधुनिक प्रचार उपकरणों (जैसे ज्ञानरथ, अटैची-उपकरण) का समाधान प्रस्तुत किया है। अब वक्ताओं या गायकों का अभाव होने पर भी कोई भी शिक्षित या अशिक्षित व्यक्ति इन यंत्रों के सहारे "चल तीर्थ" बन सकता है। ये टोलियाँ और उपकरण गली-कूचों, हाट-बाजारों में जाकर भजन-गीत और प्रवचन के माध्यम से युग चेतना का संदेश फैलाते हैं, ठीक उसी तरह जैसे पुराने समय में परिव्राजक किया करते थे।

अध्याय 8: आगामी दस वर्ष—अति महत्वपूर्ण

सरल स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: प्राचीन काल में सतयुग का वातावरण कैसे बना रहता था?

उत्तर: प्राचीन काल में ऋषिकल्प महामानव विद्या विस्तार (श्रेष्ठ मानवीय मूल्यों की शिक्षा) के दायित्व को आश्रमों, गुरुकुलों, तीर्थों और सत्संगों के माध्यम से पूरा करते थे, जिससे सतयुग का वातावरण बना रहता था।

2. प्रश्न: लेखक ने युग संधि काल का घोंसला कहाँ बताया है?

उत्तर: लेखक ने युग संधि काल का घोंसला शान्तिकुञ्ज में बताया है।

3. प्रश्न: दस वर्षों में कितने युग शिल्पियों को प्रशिक्षित करने की योजना है?

उत्तर: एक वर्ष में एक लाख, अर्थात् दस वर्षों में दस लाख युग शिल्पियों को प्रशिक्षित करने की योजना है।

4. प्रश्न: प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले हर व्यक्ति को क्या अतिरिक्त जिम्मेदारी सौंपी गई है?

उत्तर: हर प्रशिक्षित व्यक्ति को यह जिम्मेदारी सौंपी गई है कि वह अपने क्षेत्र में दस नए अपने जैसे लोकसेवी तैयार करे, ताकि दस वर्षों में यह संख्या एक करोड़ तक पहुँच जाए।

5. प्रश्न: स्थान की कमी को देखते हुए शिक्षण सत्रों को कितने दिन का कर दिया गया है?

उत्तर: शिक्षण सत्रों को सिकोड़ कर पाँच दिवसीय बना दिया गया है।

6. प्रश्न: युगसाधना की पूर्णाहुति कब और कहाँ करने की योजना है?

उत्तर: इसकी पूर्णाहुति सन् 1995 और सन् 2000 में दो खंडों में होगी, जिसे एक स्थान पर न करके 24 सौ प्रज्ञापीठों और 24 हजार प्रज्ञाकेन्द्रों में सम्पन्न किया जाएगा।

कठिन स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: "प्राण-प्रत्यावर्तन तो थोड़े समय में भी हो सकता है।" इस कथन को सिद्ध करने के लिए लेखक ने कौन से उदाहरण दिए हैं और इसका पाँच दिवसीय सत्रों के लिए क्या महत्व है?

उत्तर: इस कथन को सिद्ध करने के लिए लेखक ने देवर्षि नारद का उदाहरण दिया है जो ढाई घड़ी (बहुत कम समय) में ही किसी को भी चैतन्य कर देते थे, और विश्वामित्र का उदाहरण दिया जिन्होंने राम-लक्ष्मण को थोड़े ही समय में बला-अतिबला विद्याएँ सिखा दी थीं। इसका महत्व यह है कि भले ही पाँच दिवसीय सत्र ज्ञान देने के लिए कम हों, पर वे व्यक्ति के भीतर प्रेरणा और चेतना जगाने (प्राण-प्रत्यावर्तन) के लिए पर्याप्त हो सकते हैं।

2. प्रश्न: सतयुग की वापसी के लिए प्रशिक्षित "नैष्ठिकों के वर्ग" की तुलना "इंजन" से क्यों की गई है?

उत्तर: यह तुलना इसलिए की गई है क्योंकि जैसे एक इंजन अपने पीछे जुड़े अनगिनत डिब्बों को खींचकर ले जाता है, उसी प्रकार यह प्रशिक्षित वर्ग एक नेतृत्वकारी शक्ति के रूप में काम करेगा जो अपने पीछे समाज के विशाल जनसमूह (डिब्बों) को प्रगति और परिवर्तन के मार्ग पर घसीटता हुआ ले चलेगा। यही सामूहिक शक्ति सतयुग की वापसी का आधार बनेगी।

3. प्रश्न: महाकाल जब करवटें बदलता है तो कैसी उलट-पुलट होती है? वर्तमान समय में ऐसा क्या हो रहा है?

उत्तर: महाकाल के करवट बदलने का अर्थ है युग परिवर्तन का समय, जब बहुत बड़ी और तीव्र उलट-पुलट होती है, जिसे देखकर आश्चर्य होता है। वर्तमान समय में भी लोगों के मन-मानस में समुद्र-मंथन जैसा हृदय-मंथन चल रहा है और दैवीय आह्वान को समझने और अपनाने के लिए एक तीव्र प्रवाह बह रहा है, जो इसी बड़े परिवर्तन का संकेत है।

कठिनतम स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: लेखक ने पतझड़-बसंत और रात्रि-प्रभात के प्राकृतिक चक्रों का उदाहरण देकर सतयुग की वापसी के बारे में क्या समझाना चाहा है?

उत्तर: इन उदाहरणों से लेखक यह समझाना चाहते हैं कि विनाश और सृजन एक प्राकृतिक और cyclical प्रक्रिया है। जैसे रात के बाद सुबह और पतझड़ के बाद बसंत का आना निश्चित है, उसी प्रकार कलियुग रूपी विनाशकारी पतझड़ और रात्रि के बाद सतयुग रूपी सृजनात्मक बसंत और प्रभात का आना भी निश्चित है। हमें वर्तमान की नकारात्मक परिस्थितियों (कुयोग) से निराश नहीं होना चाहिए, क्योंकि यह एक नए और बेहतर युग के आगमन की तैयारी मात्र है।

2. प्रश्न: युग संधि महापुरश्चरण के आयोजन को "अभूतपूर्व" और "सतयुग की वापसी का विश्वव्यापी उद्घोष" क्यों कहा गया है? इसकी विशालता और प्रभाव का वर्णन करें।

उत्तर: इसे अभूतपूर्व इसलिए कहा गया है क्योंकि यह अब तक के धर्मानुष्ठानों में सबसे विशाल होगा। इसमें एक करोड़ साधक, 24 करोड़ जप और एक लाख से अधिक वेदियों वाले दीप यज्ञ सम्मिलित होंगे, जो हजारों केंद्रों पर एक साथ होंगे। इसे "विश्वव्यापी उद्घोष" इसलिए कहा गया है क्योंकि इसकी विशालता और इसके संपर्क में आने वाले करोड़ों-अरबों लोगों पर पड़ने वाला प्रभाव इतना सशक्त होगा कि यह पूरी दुनिया में एक नए युग के आगमन की घोषणा कर देगा। यह सम्मिलित आध्यात्मिक शक्ति नवयुग के अवतरण को यथार्थ बना देगी, जिससे लोग इक्कीसवीं सदी में गंगावतरण का प्रत्यक्ष दर्शन कर सकेंगे।

अध्याय 1 और 2 से परिभाषाएँ

- **प्रकृति (मनुष्य के संदर्भ में)** - मान्यता, भावना, विचारणा, इच्छा और गतिविधियों का समुच्चय।
- **मौलिक दुष्प्रवृत्ति** - आत्म-केंद्रित स्वार्थ परायणता, जो व्यक्ति को निष्ठुर और कृपण बना देती है और जिसके कारण असंख्य छल, प्रपंच, अपराध और अनर्थों का जन्म होता है।
- **विद्या** - वह ज्ञान जो चरित्रनिष्ठ और भाव-संवेदना युक्त व्यक्तित्व का निर्माण करता है। इसमें उत्कृष्ट आदर्शवादिता और दूरदर्शी विवेकशीलता शामिल है।
- **शिक्षा** - मात्र साक्षरता या जानकारी, जो विद्या के अभाव में मनुष्य को निपट स्वार्थी भी बना सकती है।
- **इक्कड़ मनुष्य** - वह व्यक्ति जो सामूहिकता को भूलकर संकीर्ण स्वार्थपरता में जीता है और जिस पर हमेशा स्वार्थ का प्रेत-पिशाच चढ़ा रहता है। ऐसा व्यक्ति किसी पर भी हमला कर सकता है और हर किसी के लिए खतरनाक होता है।
- **संयम** - अपनी निजी आवश्यकताओं और महत्वाकांक्षाओं को घटाना।
- **सेवा-साधना** - विद्या-विस्तार के लिए तड़प और पुरुषार्थ से भरा हुआ प्रयास।
- **सच्चे संयमी/तपस्वी/बैरागी** - वे लोग जो घर-परिवार के बीच रहते हुए भी अपनी निजी सुविधाओं में कटौती के प्रति श्रद्धा रखते हैं।

अध्याय 3 और 4 से परिभाषाएँ

- **अध्यात्म स्तर की कर्मयोग साधना** - संयम और सेवा के दो व्रतों को धारण करना।
- **दुर्बुद्धि धोने के दो साधन** - स्वाध्याय और सत्संग।
- **झोला पुस्तकालय** - एक प्रक्रिया जिसमें कंधे पर झोला लटकाकर युग साहित्य भरा जाता है और लोगों को घर बैठे पढ़ने के लिए दिया जाता है तथा बाद में वापस ले लिया जाता है।
- **बोलती दीवारें** - दीवारों पर लिखे गए आदर्श वाक्य, जो राहगीरों को निरंतर आदर्शवादी प्रेरणाएँ देते रहते हैं।
- **सूक्ष्म शरीर** - मनुष्य का एक अदृश्य शरीर, जिसमें दूरदर्शिता का निवास होता है और जिसके परिष्कार के लिए जप की साधना निर्धारित है।
- **कारण शरीर** - मनुष्य का एक अदृश्य शरीर, जिसमें भाव-संवेदना का निवास होता है और जिसके परिष्कार के लिए ध्यान की साधना निर्धारित है।
- **संध्याकाल** - रात्रि का समापन और प्रभात के आगमन का समय।
- **युग संधि महापुरश्चरण** - नवयुग की ज्ञान गंगा को धरती पर उतारने वाली एक सामूहिक और सम्मिलित स्तर की भगीरथ साधना।

अध्याय 5, 6 और 7 से परिभाषाएँ

- **विचारक्रांति** - "अपना सो अच्छा, पराया सो बुरा" की संकीर्ण मान्यता को त्यागकर राजहंस की तरह नीर-क्षीर विवेक की नीति अपनाना, अर्थात् सत्य और औचित्य को कहीं से भी ग्रहण करना।
- **ज्ञानरथ** - साइकिल के पहियों वाला एक प्रचार वाहन, जिसमें बैटरी, टेपरिकार्डर और लाउडस्पीकर लगे होते हैं, जिसका उपयोग गली-मुहल्लों में युग चेतना का संदेश पहुँचाने के लिए किया जाता है।
- **"पिकनिक"** - मन हल्का करने का एक अच्छा मनोरंजन, जिसे सभ्य समुदाय के लोग अत्यन्त प्रभावशाली और सार्थक विनोद मानते हैं।
- **अचल तीर्थ** - ईंट, चूने, सीमेंट जैसे जड़ पदार्थों से बने स्थिर तीर्थ स्थान, जहाँ लोगों को दर्शन के लिए जाना पड़ता है।
- **चल तीर्थ** - वे जीवन्त, चलते-फिरते व्यक्ति (जैसे साधु, परिव्राजक) जो प्राण-चेतना बिखेरते हुए स्वयं लोगों के घर-द्वार तक पहुँचते हैं।

अध्याय 8 से परिभाषाएँ

- **सतयुग** - ऐसी परिस्थितियाँ जब अन्तराल में सद्भावनाएँ लहराती हों, प्राण-चेतना में उल्लास भरी उमंगें उभरती हों और वातावरण में सुख-शान्ति के तत्त्व उछलते-उफनते दिखाई पड़ते हों।